Indian J. Soc. & Pol. 10 (01) : 115-120: 2023 **ISSN : 2348-0084 (PRINT)**
First Published Online 31 JANUARY 2023 **ISSN: 2455-2127 (ONLINE)**

नेपाल में चीन की बढ़ती भूमिका के संदर्भ में भारत की सॉफ्ट पॉवर कूटनीति : एक मूल्यांकन

प्रमोद कुमार पांडेय[1], गुंजन त्रिपाठी[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, एम.एल.जे.एन.के. गर्ल्स कॉलेज, सहारनपुर, उ.प्र., भारत
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, एम.एल.जे.एन.के. गर्ल्स कॉलेज, सहारनपुर, उ.प्र., भारत

ABSTRACT

भारत तथा नेपाल सदियों पुरानी सभ्यता वाले देश हैं। दोनों देशों की सामाजिक, सांस्कृतिक एकता तथा आपसी भाईचारा और सद्भाव दुनिया के लिए आदर्श रहा है। खुली सीमा और रोटी–बेटी के रिश्तो के साथ दोनों देश हमेशा गहरे रिश्तो में बने रहे। नेपाल की राजशाही तथा भारतीय लोकतंत्र के बीच खींचतान से उत्पन्न वैचारिक गतिरोधों ने नेपाल में चीन को घुसपैठ का स्वर्णिम अवसर दे दिया। नेपाली कम्युनिस्ट दलों ने भी लगातार चीन का समर्थन किया है। नेपाली आधारभूत संरचना तथा विकासात्मक परियोजनाओं में लगातार बढ़ते चीन के निवेश ने भारत के माथे पर चिंता की लकीरें खींच दी है। भारत नेपाल के साथ अपने संबंधों को ज्यादा तरजीह देता है तथा नेपाल को समय–समय पर सभी प्रकार की जरुरी सहायता भी उपलब्ध कराता है। मोदी की नेपाल यात्रा ने दोनों देशों के सदियों पुराने धार्मिक–सांस्कृतिक संबंधों को पुनर्जीवित किया है। प्रस्तुत पत्र भारत और नेपाल के संबंधों में हो रहे परिवर्तन के कारणों का पता लगाने तथा चीन की नेपाल में बढ़ती भूमिका के बीच दोनों देशों के संबंधों को सामान्य करने में सॉफ्ट पॉवर कूटनीति का मूल्यांकन करता है।

KEYWORDS– *बहुलवाद, कूटनीति, सॉफ्ट पावर, चीन, विदेश नीति*

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में दो देशों के मध्य सहयोग व शांतिपूर्ण संबंधों पर अधिक जोर दिया जाता हैं, लेकिन बहुलवादी व्यवस्थाएं राज्य के बजाय समुदायों पर अधिक बल देती हैं। जिसमें माना जाता है कि लोगों के मध्य संबंध, आपसी सहयोग व शांति की स्थापना में ज्यादा सहायक है। भारत व नेपाल दो ऐसे ही राष्ट्र हैं, जिसमें दोनों के मध्य विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ रहे सहयोग की तुलना में लोगों के मध्य सदियों पुराने सामाजिक–सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और भाषाई संबंध ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। दोनों देशों के बीच 1751 किमी. लंबी खुली सीमा है। जिसके अंतर्गत दोनों देशों के नागरिकों को बिना परमिट आने–जाने की सुविधा प्राप्त है। यह दोनों देशों के ऐतिहासिक संबंधों को और ज्यादा प्रगाढ़ और मजबूत बनाती है। भारत और नेपाल संबंधों के बीच चीन एक प्रमुख कारक है। चीन, नेपाल में भारत का विकल्प बनना चाह रहा है। इसके लिए वह नेपाल में आधारभूत ढांचा निर्माण परियोजनाओं में भारी–भरकम निवेश तथा सस्ते ऋण उपलब्ध करा रहा है। इस कारण नेपाल–चीन सहयोग तेजी से आगे बढ़ा है। प्रस्तुत पत्र नेपाल–चीन के बढ़ते सहयोग तथा इससे निपटने में भारत द्वारा किए जा रहे कूटनीतिक प्रयासों की समीक्षा करता है। भारत–नेपाल के मजबूत ऐतिहासिक–सांस्कृतिक संबंधों तथा भारत द्वारा नेपाल के प्रति अपनायी गई सॉफ्ट पॉवर कूटनीति ने भारत को स्वभावतरू बढ़त दिला रखी है। फिर भी चीन दोनों देशों के मध्य तनाव का महत्वपूर्ण बिंदु है। यह पत्र इस बात की भी तस्दीक करता है कि भारत किस प्रकार चीन की मौजूदगी में भी अपने संबंधों को नेपाल के साथ बेहतर और सौहार्दपूर्ण बना सकता है। साथ ही, किन क्षेत्रों में भारत को और ज्यादा सहयोग करने का सुअवसर प्राप्त हो सकता है।

नेपाल तथा चीन के राजनीतिक संबंध 1960 के दशक में स्थापित हुए तथा लगातार बेहतर ही हुए हैं। जबकि भारत– नेपाल संबंध ऐतिहासिक रूप से सदियों से जुड़े होने के बावजूद हमेशा तनाव की स्थिति में ज्यादा दिखाई देते हैं। भारत–नेपाल संबंधों में विश्वास बहाली की जरूरत हमेशा बनी रहती है, क्योंकि नेपाल में चीन की बढ़ती भूमिका ने दोनो देशों के संबंधों को उकसाने का कार्य लगातार किया है। नेपाल एक प्राचीन सभ्यता वाला देश रहा है। महाभारत महाकाव्य में किरातो के भू–भाग के रुप में भी नेपाल का उल्लेख मिलता है। काठमांडू के पास से प्राप्त पुरातात्विक औजारों के अवशेषों ने यह साबित किया है कि नेपाल में 9000 साल पहले भी विकसित सभ्यता का एक व्यवस्थित जीवन पाया जाता था। (सिंह 2020) भारत के साथ नेपाल की ऐतिहासिकता का प्रमाण इस बात से भी साबित होता है कि काठमांडू घाटी में उत्खनन के परिणाम स्वरूप ऐसे अनेकों शिलालेख व स्तंभ लेख प्राप्त हुए हैं, जो सम्राट अशोक के शासनकाल में तैयार किए गए थे। (रेग्मी 1952) नेपाल के प्राचीन इतिहास को यदि हम खँगालें तो लगभग 1000 वर्ष तक किरातों का शासन रहा। बाद में 800 वर्षों के आस–पास लिच्छवियों ने शासन किया। इसके बाद ठकुरी और मल्लों के शासकों का राज रहा। इस देश में लिच्छवी, ठकुरी और मल्लों के शासनकाल में हिंदू और बौद्ध धर्म खूब फले फूले और मंदिरों, स्तूपों तथा मूर्तियों के निर्माण में बहुत प्रगति हुई।

सांस्कृतिक क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियों के बावजूद नेपाल राजनीतिक रूप से अनेक छोटे–छोटे राज्यों में विभाजित था, जिनमें आपस में कलह और संघर्ष का वातावरण व्याप्त था। (सिंह 2020) गोरखा रियासत के शासक पृथ्वी नारायण शाह ने 18 वीं शताब्दी के

1: Corresponding Author

उत्तरार्ध में हिमालय की गोद में वृहत्तर हिंदू राज्य की स्थापना के पवित्र एवं महान उद्देश्य से प्रेरित होकर वर्तमान नेपाल का एकीकरण कर उसे भौतिक स्वरुप प्रदान किया। पृथ्वी नारायण शाह के उत्तराधिकारियों ने अपने साम्राज्य की सीमाओं को भारत में भी फैलाना शुरू किया जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने भारत के कुमाऊं और गढ़वाल के जिले अपने अधिकार में ले लिया। 1800 ई– के बाद शाह वंश के शासकों की शक्ति क्षीण होने लगी, जिससे वे नेपाल में दृढ़ राजनीतिक नियंत्रण रखने में कामयाब नहीं हो पा रहे थे। इसी समय नेपाल का ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ युद्ध (1814–16) आरम्भ हो गया। परिणाम स्वरूप दोनों देशों के बीच सुगौली की संधि (1816) हुई। इस संधि के अंतर्गत नेपाल को कुमाऊं और गढ़वाल अंग्रेजों को देने पड़े। इसके बदले में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने नेपाल को आश्वासन दिया कि वह नेपाल के आंतरिक मामले में किसी भी प्रकार का कोई हस्तक्षेप नहीं करते हुए उसे पूर्ण स्वायत्तता प्रदान करेगी। (खन्ना 1997) नेपाल में शाह वंश के शासन के दौरान ही वास्तविक सत्ता वहां के प्रधानमंत्री जंग बहादुर सिंह राणा के हाथों में केंद्रित हो गयी। राणा के वंशजों को ब्रिटिश सरकार के साथ बेहतर रिश्तों के कारण सर जैसी उपाधियां भी प्राप्त हुई। राणा ने 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विद्रोह को दबाने के लिए नेपाली गोरखा सैनिक भेजकर अंग्रेजों की सहायता की। इसके बदले में अंग्रेजों ने नेपाल की स्वतंत्रता का पूरा आश्वासन दिया। वर्ष 1923 में नेपाल और ब्रिटेन के मध्य एक संधि भी हुई, जिसके अंतर्गत नेपाल की संप्रभु स्वतंत्रता को मान्यता प्रदान कर दी गयी। (भट्टाचार्य 1970)

वर्ष 1940 से नेपाल में लोकतांत्रिक समर्थक आंदोलनों ने जोर पकड़ना प्रारंभ कर दिया। लोकतंत्र की स्थापना का सुझाव राणा शासकों को स्वीकार नहीं था। भारत एक लोकतान्त्रिक देश होने के कारण लोकतान्त्रिक शक्तियों को समर्थन देना शुरू किया।अपनी सुरक्षा के कारण भारत नेपाल की राजनीति से उदासीन नहीं रह सकता था, इसलिए 1947 में नेपाल के प्रधानमंत्री की मांग पर भारत सरकार ने एक वरिष्ठ भारतीय राजनयिक श्री श्री प्रकाश को नेपाल भेजा। जिससे नेपाल का संविधान तैयार किया जा सके, लेकिन जो संविधान निर्मित हुआ, वह राजशाही की निरंकुशता का अंत करने वाला था, इसलिए उसे राजाओं ने क्रियान्वित नहीं होने दिया। (फड़िया 2012) वर्ष 1949 में भारत सरकार नेपाल के साथ एक संधि के मसविदा पर तैयार हुई, जिसमें महत्वपूर्ण शर्त यह थी कि नेपाल में लोकतांत्रिक प्रणाली स्थापित होगी। नेपाल के राणा मोहन शमशेर सिंह जंग प्रतिष्ठित राणा परिवार के वंशज थे, इसलिए उन्होंने लोकतांत्रिक पद्धति का समर्थन नहीं किया। नेपाल की सुरक्षा और चीन की तिब्बत में बढ़ती गतिविधियां भारत को चिंता में डाल रही थीं। 17 मार्च, 1950 को भारतीय प्रधानमंत्री नेहरू ने संसद में यह आशंका भी व्यक्त की थी कि नेपाल पर कोई भी संभावित आक्रमण निश्चित रूप से भारतीय सुरक्षा के लिए खतरा साबित होगा। जुलाई, 1950 में भारत–नेपाल के बीच शांति और मित्रता के संधि पर हस्ताक्षर किये गये।

नेपाल के राणा शासकों की सोच थी कि भारत नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना करना चाह रहा है, इसलिए वह नेपाली राजनीतिक दलों को समर्थन दे रहा है। इस कारण भारत सरकार और नेपाल के राणा सरकार के संबंधों में तनाव उत्पन्न हो गया। इसलिए भारत के महत्व को कम करने हेतु नेपाल अन्य देशों के साथ भी कूटनीतिक और व्यापारिक संबंध स्थापित करने शुरू किये। 16 नवंबर 1950 की एक घटना, जिसमें नेपाल के महाराजा त्रिभुवन ने राज परिवार के 14 सदस्यों के साथ अपने राजमहल को छोड़ करके भारत में शरण ले ली। राणा समशेर के विरुद्ध गृह युद्ध शुरू हो गया। भारत के सहयोग से ही नेपाल में राणाशाही का अंत हुआ और नेपाल के महाराज वास्तविक शासक बने तथा लोकतंत्र की स्थापना हुई, जिसमें प्राचीन वंशानुगत राणा शासन को समाप्त कर 10 सदस्यीय मंत्रिपरिषद को शपथ दिलाई गई। इस समय पंडित नेहरू ने कहा कि नेपाल की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए भी हम नेपाल में कोई अव्यवस्था सहन नहीं कर सकते क्योंकि इससे हमारी सीमा सुरक्षा कमजोर होती है। भारत ने बार–बार संयुक्त राष्ट्र में नेपाल की सदस्यता की वकालत की और 1955 में उसके सदस्य बन जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। नेपाल के विदेश मंत्री ने 1 फरवरी 1955 को एक भाषण के दौरान कहा कि नेपाल किसी भी दशा में भारत के विरुद्ध नहीं जाएगा क्योंकि भारत ने नेपाल को अंतरराष्ट्रीय मान्यता दिलाने में बड़ी सहायता दी है और वह नेपाल का सबसे बड़ा मित्र है। (फड़िया 2012)

नेपाल ने चीन की विस्तारवादी नीति को वर्ष 1962 में भारत की सीमाओं पर आक्रमण के समय देखा। इसके बाद भारत–नेपाल संबंधों में परिवर्तन महसूस किए जाने लगे। प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की नेपाल यात्रा के साथ भारत – नेपाल के संबंध नये युग में प्रवेश किये। (चतुर्वेदी 1983) भारत ने लगातार कई दशकों तक नेपाल में बिना किसी भेद के सभी क्षेत्रों में समान सहायता पहुंचायी है। वर्ष 1950 की शांति एवं मित्रता की संधि ने दोनों देशों के संबंधों को एक अनूठे रिश्ते में पिरोया है। जिसके अंतर्गत भारत में लाखों नेपाली स्वतंत्र रूप से पूरे भारत में कहीं भी रह सकते हैं। नेपाली नागरिकों को भारत सरकार की सेना सहित अनेक सेवाओं के योग्य माना जाता है। नेपाली नागरिक बिना किसी बाधा के व्यवसाय कर सकते हैं और उनके द्वारा नेपाल को भेजे गए पैसे पर भी कोई पाबंदी नहीं है। (भसीन 1970) नेपाल को भारत द्वारा जल विद्युत परियोजनाओं के विकास हेतु लगातार वित्तीय और तकनीकी मदद प्राप्त हो रही है। नेपाली छात्रों को भारत में अध्ययन के दौरान विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति प्रदान की जाती रही है। नेपाल एक अन्तस्थ देश है, इस कारण ट्रीटी ऑफ ट्रेड एंड ट्रांजिट के अंतर्गत नेपाल को अपने प्राथमिक उत्पाद एवं विनिर्मित वस्तुओं की दुनिया के अन्य देशों के साथ व्यापार हेतु भारत ने भारतीय क्षेत्र में से होकर यातायात मार्ग प्रदान किये हैं। नेपाल आयातकों को कोलकाता बंदरगाह पर विशेष सुविधाएं दी जाती रही है। (पंत 1970)

नेपाल और जनवादी गणराज्य चीन के बीच सदियों पुराने मैत्रीपूर्ण और सौहार्द पूर्ण द्विपक्षीय रहे हैं। दोनों देशों के संबंधों में बौद्ध धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दोनों देशों के संबंधों को नेपाली भिक्षु और विद्वान बुद्धभद्र (5 वीं शताब्दी की शुरुआत), राजकुमारी भृकुटी (7 वीं शताब्दी की पहली छमाही) और अरानिको

अनीगे (13 वीं शताब्दी के दूसरे भाग) और भिक्षु फा जियान (जिन राजवंश), भिक्षु जुआन जांग (तांग राजवंश) जैसे चीनी भिक्षुओं और विद्वानों की शुरुआत यात्राओं ने और मजबूत किया है। दोनों देश नेपाल के उत्तरी हिस्से की हिमालय श्रृंखला में 1414 किमी. की सीमा साझा करते हैं। दोनों देशों ने 1 अगस्त, 1955 को औपचारिक रूप से अपने राजनयिक संबंधों की स्थापना की और शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के पंच सिद्धांतों के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की। (ीजजचेरूध्ध्उवर्ि.हिवअ.दचध द.क.) चीन तथा भारत के साथ नेपाल के वैदेशिक संबंध बहुत व्यापक, महत्वपूर्ण तथा गतिशील हैय फिर भी विशेष रूप से भारत—नेपाल संबंधों में चीन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत—नेपाल संबंधों में उतार तथा चढ़ाव दोनों समय के साथ देखने को मिलता है परंतु नेपाल—चीन संबंध हमेशा मैत्रीपूर्ण और सौहार्दपूर्ण रहे हैं। चीन ने हमेशा नेपाल के साथ संबंधों में सकारात्मकता को बनाये रखा हुआ है। वह नेपाल के साथ अपने संबंधों का महत्व बहुत ही अच्छे से समझता है इसलिए वह नेपाल के किसी भी मामले में हस्तक्षेप (आंतरिक या बाह्य) करके तनाव को पैदा करने की कोशिश बिल्कुल भी नहीं करता है। नेपाल ने हमेशा 'एक चीन नीति' के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता दिखाई है। नेपाल ने चीन के खिलाफ किसी भी शत्रुता पूर्ण गतिविधियों के लिए अपनी धरती का इस्तेमाल कभी नहीं होने दिया है। नेपाल द्वारा ताइवान, तिब्बत तथा चीन के संप्रभु अधिकारों और हितों से संबंधित अन्य प्रमुख मुद्दों पर वर्षों से चीन का मजबूत समर्थन किया जाता रहा है। (दहल 2018) चीन भी स्वतंत्र घरेलू और विदेशी नीतियों को आगे बढ़ाने में नेपाल का समर्थन करता है। उसका मानना है कि सभी बड़े या छोटे देश समान हैं, और चीन उन सभी देशों की संप्रभुता, स्वतंत्रता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करता है। चीन का मानना है कि नेपाल के मामलों को नेपाली लोगों को खुद तय करना चाहिए। चीन नेपाल की संप्रभुता और स्वतंत्रता को कमजोर करने तथा नेपाल के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का विरोध करता है। (वांग,2022)

चीन नेपाल का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। 2017—18 में, नेपाल का चीन को कुल निर्यात 23 मिलियन अमेरिकी डॉलर था। जबकि इसी अवधि के दौरान चीन से आयात 1—5 अरब अमेरिकी डॉलर से ऊपर रहा। नेपाल का चीन के साथ व्यापार घाटा लगातार बढ़ता जा रहा है। हालाँकि, चीन ने 2009 से 8,000 से अधिक नेपाली उत्पादों को शून्य टैरिफ प्रविष्टि की सुविधा दी है। नेपाल नियमित रूप से चीन में आयोजित विभिन्न व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों में भाग लेता है। नेपाल ने नवंबर 2018 में शंघाई में आयोजित चीन अंतर्राष्ट्रीय आयात एक्सपो में भाग लिया। 16 वां नेपाल—चीन का तिब्बत आर्थिक और व्यापार मेला 24—29 अक्टूबर, 2018 को ल्हासा में आयोजित किया गया था। चीन—नेपाल में पर्यटन के क्षेत्र में भी सहयोग लगातार बढ़ रहा है। वर्ष 2018 के दौरान 1,64,694 चीनी पर्यटकों ने नेपाल का दौरा किया। नेपाल सरकार ने 1 जनवरी 2016 से चीनी पर्यटकों को आकर्षित करने लिए वीजा शुल्क भी माफ कर दिया है। चीन ने अपने देश में वर्ष 2017 को नेपाल पर्यटन प्रोत्साहन वर्ष के रूप में घोषित किया था। दोनों देशों में सांस्कृतिक संपर्क भी बढ़ रहा है(जिसमें नियमित सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन, सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के महत्वपूर्ण लोगों की मैत्रीपूर्ण यात्रा, प्रदर्शनी, फिल्म शो, भोजन आदि के माध्यम से लोगों से लोगों के बीच संबंधों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस तरह नेपाल और चीन अर्थव्यवस्था, व्यापार, परिवहन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, संस्कृति, पर्यटन, शिक्षा, खेल और स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में आदान—प्रदान और सहयोग तेजी से बढ़ा रहे हैं। (https://mofa-gov-np/ n-d.)

भारत नेपाल के बीच संबंध लोगों से लोगों के बीच संबंधों पर आधारित है। इस कारण भारत की सॉफ्ट पावर कूटनीति कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर अपना ध्यान केंद्रित करती है यथा— सहायता(।पक), जल विद्युत परियोजना सहयोग, शैक्षिक सहयोग, सांस्कृतिक आदान—प्रदान तथा ऐतिहासिक संबंध। (मिश्रा ।चतपसदृ श्रनदम 2016) सहायता, चीन जैसे देशों के लिए एक विशुद्ध राजनीतिक उपकरण हो सकती है, परंतु भारत के सहायता का दृ ष्टिकोण नेपाल में लोगों के साथ एक जुड़ाव पर आधारित है। भारतीय अनुदान नेपाल के बुनियादी ढांचे के विकास, स्वास्थ्य, ग्रामीण और सामुदायिक विकास, शिक्षा आदि के प्रयासों के लिए दिया जाता है, परंतु चीनी सहायता का एक बड़ा हिस्सा नेपाल की सेना और पुलिस को जाता है। वर्ष 2011 में चीन ने नेपाली सेना को 19 मिलियन अमेरिकी डॉलर और देश के पुलिस बल को कई मिलियन अमेरिकी डॉलर दिये। (गार्डनर 2014) चीन, नेपाल के साथ अपनी सुरक्षा चिंताओं के कारण भी दोनों देशों के संबंधों को बेहतर रखना चाहता है। चीन के लिए तिब्बत का मुद्दा एक चीनी नीति का आधार है। नेपाल का तिब्बत के साथ ही सदियों से पारस्परिक संबंध रहा है, चीन उस समय नेपाल का एक दूर का पड़ोसी था। नेपाल भले ही अपने देश में चीन विरोधी गतिविधियों की इजाजत नहीं देते हुए बार—बार एक चीन नीति के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करता है। फिर भी, चीन को संदेह है कि नेपाल में तिब्बती शरणार्थी आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और मानवीय आवरण के तहत चीन विरोधी गतिविधियों का संचालन करते हैं। नेपाल को इस तरह की गतिविधियों को दबाने में मुश्किल होती है, क्योंकि नेपाल में ऐसे कई लोग हैं जो दलाईलामा पर आध्यात्मिक विश्वास रखते हैं। (बराल 2019)

वर्ष 1950 के बाद नेपाल राजशाही, लोकतंत्र, माओवाद, गणतंत्रवाद और संविधानवाद की प्रक्रियाओं से गुजरा है। नेपाल ने अपने दोनों पड़ोसियों के साथ संबंधों में यह महसूस किया है कि भारत एक गैर विस्तारवादी तथा किसी विशेष विचारधारा का प्रचार—प्रसार नहीं करता है। परंतु चीन ने यह प्रदर्शित किया है कि यह नेपाल की सामाजिक—सांस्कृतिक विविधता के लिए घुसपैठ, शोषणकारी और हानिकारक हो सकता है। हाल ही में श्रीलंका की अस्थिरता के लिए चीन के निवेश को जिम्मेदार माना गया है, जिसमें ऋणों की उच्च्व दरें शामिल थीं। नेपाल में भी बीआरआई प्रोजेक्ट के विरोध के स्वर सुनाई देने लगे हैं। मई, 2017 में बीआरआई के समझौता ज्ञापन के बाद पिछले पांच सालों में एक भी परियोजना को अंतिम रूप नहीं दिया गया है। नेपाली नागरिकों द्वारा इस बात की पुरजोर मांग की जा रही है कि परियोजना की पारदर्शिता रखते हुए देश के नागरिकों को यह बताया जाना चाहिए कि इसमें लगने वाला पैसा अनुदान (ग्रांट) है अथवा ऋण (लोन)। (चौधरी, चाइनाश्ज

एगोनीरू स्लो पेस ऑफ बीआरआई प्रोजेक्ट इन नेपाल 2022) चीनी कंपनियां नेपाल के आधारभूत परियोजनाओं के विकास में निर्धारित लागत को भी समय–समय पर बदल रही हैं। चीनी सीएएमसी इंजीनियरिंग कंपनी ने अगस्त, 2013 में एक परियोजना के लिए 264 मिलियन यूएस डॉलर की पहले निर्धारित लागत को कुछ समय बाद 305 मिलियन यूएस डॉलर कर दिया। (चाइना एनकरेज नेपाल टू लिव लक्जरियस्ली विथ इट ऑन लोन, अलार्म बेल फॉर अनादर डेब्ट ट्रैप 2022)

बीआरआई प्रोजेक्ट को लेकर नेपाल सरकार की चीन के साथ तीन मुख्य चिंताएं हैं– पहली, नेपाल वाणिज्यिक ऋणों की बजाय चीन से अनुदान और सॉफ्ट लोन को प्राथमिकता देता है। दूसरी, ब्याज दर और पुनर्भुगतान का समय विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक जैसी बहुपक्षीय वित्तपोषण एजेंसियों के अनुरूप होना चाहिए। तीसरी, बीआरआई प्रोजेक्ट प्रतिस्पर्धी बोली हेतु सभी के लिए खुला होना चाहिए। भू–राजनीतिक विश्लेषक सी. डी. भट्ट के अनुसार, श्रीलंका के संप्रभु ऋण संकट और नेपाल के अपने दक्षिणी पड़ोसी भारत के प्रति सामाजिक–संरचनात्मक झुकाव तथा भारत द्वारा इस समय अपनायी जा रही सॉफ्ट पावर नीतियों की वजह से नेपाल में बीआरआई की लोकप्रियता में गिरावट आयी है। 2017 में चीन के लिए बहुत ही अनुकूल परिस्थितियां थी, जब बीआरआई प्रोजेक्ट की ओर दुनिया के कई देश आकर्षित थे और नेपाल में भी उस समय दो–तिहाई बहुमत वाली वामपंथी सरकार थी। जिसके प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल थे। दहल को एक चीनी समर्थक माओवादी नेता माना जाता है। इन्होंने बीआरआई के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए इसे नेपाल–चीन संबंधों का महत्वपूर्ण क्षण बताया था। (वेले 2022)

हाल ही में, नेपाल–चीन संबंध तनाव के दौर से गुजरे जब नेपाल ने फरवरी, 2022 में 500 मिलियन यूएस डॉलर के अमेरिकी मिलेनियम चौलेंज कारपोरेशन के अनुदान को स्वीकार कर लिया। यह अनुदान नेपाल में सड़क नेटवर्क तथा बिजली पारेषण लाइन के उन्नयन का वित्तपोषण करेगा। कुछ ही हफ्तों बाद, अमेरिका ने नेपाल की अर्थव्यवस्था को समर्थन देने के लिए 659 मिलियन अमेरिकी डालर की एक और सहायता राशि दी। इसके तुरंत बाद, चीनी विदेश मंत्री वांग यी की नेपाल यात्रा (25–27 मार्च, 2022) हुई। जिसमें दोनों देशों ने 9 समझौतों पर हस्ताक्षर किये, परंतु बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव (बीआरआई) परियोजनाओं और उससे जुड़े ऋणों पर कोई भी सहमति नहीं बनी। (वेले 2022)

सॉफ्ट पावर तथा सांस्कृतिक कूटनीति के नये उभार तथा भारत–नेपाल की स्वाभाविक मित्रता ने भारत को फिर एक मजबूत सहयोगी के रूप में उभारा है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अगस्त, 2014 में नेपाल का दौरा किया, जो किसी भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा 17 वर्षों में पहली बार था। मोदी सरकार भारत के पड़ोसियों के साथ व्यापक तथा गहन रूप से जुड़ने की इच्छा पहले ही प्रदर्शित कर चुकी थी। जब मई, 2014 में अपनी चुनावी जीत के तुरंत बाद मोदी जी ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में पड़ोसी देशों के नेताओं को आमंत्रित किया था। भारत ने अपनी 'नेबरहुड फर्स्ट नीति' के तहत नेपाल के साथ कनेक्टिविटी बढ़ाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की है। प्रधानमंत्री मोदी ने नेपाल के प्रधानमंत्री को अपनी यात्रा के दौरान आश्वस्त किया था कि नेपाल में चल रही शांति प्रक्रिया नेपाल की आवश्यकताओं के अनुसार पूरी की जायेगी। क्योंकि यह पूरी तरह से नेपाली मामला है। नेपाली संसद में संबोधन करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने नेपाल के लिए 1 बिलियन डॉलर की क्रेडिट लाइन की घोषणा की। प्रधानमंत्री ने कहा कि नेपाल अपनी पसंद की जल विद्युत और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर इसका इस्तेमाल कर सकता है। (एडमिन 2014)

भारत इसके माध्यम से उन क्षेत्रों में नेपाली समर्थन हासिल करना चाहता है, जहां चीन घुसपैठ कर रहा है। भारतीय विदेश नीति विशेषज्ञ सी– राजा मोहन का मानना है कि 'नेपाल में भारत की असली चुनौती चीन नहीं है बल्कि यह काठमांडू के साथ दिल्ली की अपनी भागीदारी की दुःखद विफलता है।' भारत ने सहयोग की संभावनाओं को नेपाल के आंतरिक मामलों में लगातार हस्तक्षेप करके स्वयं कम कर दिया है। अतीत में नेपाली राजनेताओं ने अपने मामलों में हस्तक्षेप करने के कारण भारत को अक्सर 'बड़े भाई' के रूप में व्यवहार करने वाला बताया है। हमें इस बात को अवश्य समझने की आवश्यकता है कि नेपाल स्वतंत्र, संप्रभु, धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य है। जिसके साथ बराबरी का व्यवहार करते हुए मित्रता का साथ भारतीय हितों के लिए जरुरी है। (शर्मा 2014) प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी पहली नेपाल यात्रा की शुरुआत से भारतीय सॉफ्ट पॉवर कूटनीति को नई दिशा दी। मोदी ने नेपाल में इतिहास का वर्णन करते हुए कहा कि जनकपुर (सीता माता की भूमि), लुंबिनी (भगवान बुद्ध का जन्म स्थान), हिमालय, गंगा, चार धाम तथा पशुपतिनाथ के माध्यम से भारत और नेपाल के बीच सदियों पुराने ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक संबंध बने हुए हैं। उन्होंने माओवादियों को समाज की मुख्यधारा में शामिल होने, शस्त्र को त्याग शास्त्र को अपनाने तथा युद्ध को छोड़कर बुद्ध की ओर प्रयाण करने की प्रशंसा की। उन्होंने सुझाव दिया कि संविधान के निर्माता ऋषियों या संतों की तरह होने चाहिए और नेपाल को एक संघीय, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए एक समावेशी संविधान लिखना चाहिए। 1950 की शांति और मित्रता संधि की वर्तमान परिदृश्य में समीक्षा, समायोजन तथा अद्यतन करने की नेपाली इच्छा को भी प्रधानमंत्री मोदी ने सहमति दी। (पीएम नरेंद्र मोदी एड्रेस्सेस नेपाल कोंस्टीटूएंट असेंबली 2014)

मोदी ने भारत और नेपाल के बीच संपर्क बढ़ाने के तीन तरीके प्रस्तावित किये– एचआईटी, अर्थात राजमार्ग (हाईवे), सूचना मार्ग (सूचना प्रौद्योगिकी) तथा ट्रांसवे (ट्रांसमिशन लाइन)। नेपाल में 1950 के दशक से ही भारतीय भागीदारी मुख्यतः तीन क्षेत्रों में रही– (1) साझा नदियों का प्रबंधन, (2) कनेक्टिविटी बढ़ाना और (3) क्षमता निर्माण। नेपाल की नदियां गंगा के प्रवाह में 46 फीसदी का योगदान करती है और शुष्क मौसम में उनका योगदान बढ़कर 71 फीसदी हो जाता है। भारत 3000 नेपाली छात्रों (नेपाल में लगभग 2,000 और भारत में 1,000) को छात्रवृत्ति प्रदान करता है। भारत समय–समय पर नेपाली नौकरशाहों, मध्य स्तर के अधिकारियों, सीमा शुल्क अधिकारियों और चुनाव आयोग के सदस्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। जिससे उन्हें सर्वोत्तम प्रशिक्षण प्राप्त

हो सके। दोनों देशों के बीच की गयी वर्ष 1950 में शांति एवं मित्रता संधि के अंतर्गत नेपाली नागरिकों को भारतीय नागरिक के जैसी सहूलियतें प्राप्त हो रहीं है। वह संपत्ति खरीद सकते हैं और सरकारी सेवाओं में भी शामिल हो सकते हैं। दोनों देशों के नागरिक एक देश से दूसरे देश में बगैर वीजा के यात्रा कर सकते हैं। (साहू 2015)

भारतीय सॉफ्ट पॉवर कूटनीति ने नेपाल के साथ विश्वास बहाली की प्रक्रिया को तीव्र किया है। फिर भी, दोनों देशों के संबंधों में समय–समय पर उतार–चढ़ाव दिखते रहते हैं। नेपाल में नवीन संविधान से असंतुष्ट मधेसी समुदाय ने संविधान के कुछ प्रावधानों को लेकर आपत्ति जताते हुए भारत–नेपाल व्यापारिक मार्गों को अवरुद्ध कर दिया था। जिससे नेपाल में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बाधित हो गई थी। इस घटनाक्रम के लिए नेपाल ने भारत को जिम्मेदार माना और भारत के विकल्पों पर विचार करते हुए चीन की तरफ तीव्र गति से अपना झुकाव बढ़ाया। नेपाल ने उसी दौरान चीन के साथ बीआरआई प्रोजेक्ट पर हस्ताक्षर भी किये। नवंबर, 2019 में जम्मू कश्मीर राज्य के विशेषाधिकार (धारा–370) को समाप्त करते हुए भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने अपना नया राजनीतिक नक्शा जारी किया। जिसमें विवादित 'कालापानी' क्षेत्र को भी नक्शे में दिखाया गया। इसे उत्तराखंड राज्य के पिथौरागढ़ जिले के हिस्से के रूप में दिखाया गया। नेपाल सरकार ने तुरंत नक्शे पर आपत्ति जारी की। क्योंकि, वह इस क्षेत्र की पहचान अपने सुदूरपश्चिम प्रान्त के दारचुला जिले में करता है। इसमें न केवल कालापानी बल्कि लिपुलेख, लिम्पियाधुरा और सुस्ता जैसे क्षेत्र भी शामिल थे। (नायक अप्रैल, 2020)

भारत में किए गए विमुद्रीकरण ने नेपाल की आर्थिक गतिविधियों को काफी हद तक प्रभावित किया, क्योंकि नेपाली लोग बिना किसी झिझक के भारतीय मुद्रा का उपयोग कर रहे थे। भारत सरकार सेंट्रल बैंक ऑफ नेपाल (नेपाल राष्ट्र बैंक) द्वारा कानूनी रूप से होल्ड 500 और ₹1000 की भारतीय मुद्रा नोटों को बदलने के लिए तैयार नहीं थी(क्योंकि वर्ष 2018 की भारतीय रिजर्व बैंक की रिपोर्ट में कहा गया की 99 . 3 प्रतिशत विमुद्रीकृत नोट औपचारिक बैंकिंग प्रणाली में वापस आ गए हैं। यह दर्शाता है कि लगभग सभी धन वापस आ गये। एनआरबी के अनुसार, नेपाल में अभी भी 33–6 मिलियन भारतीय मुद्राएं हैं। साथ ही, व्यक्तियों और अनौपचारिक क्षेत्रों के पास ₹500 और ₹1000 की भारतीय मुद्रा की मात्रा होने की संभावना थी। भारतीय व्यवहार ने नेपाल को चीन की तरफ झुकने के लिए स्वयं मजबूर किया है। इससे नेपाल में भारत विरोधी भावना भी बलवती हुई है। (गौतम दिसंबर, 2021)

भारत और नेपाल के संबंध हमेशा उतार–चढ़ाव भरे रहे, फिर भी 1950 की शांति और मित्रता की संधि ने भारत और नेपाल के बीच विशेष संबंध स्थापित किये। नेपाल जैसे भू–आबद्ध देश के लिए गैर–क्षेत्रीय आक्रमण, सम्मान और खुली सीमा के माध्यम से बिना किसी वीजा या पासपोर्ट के निर्बाध आवाजाही जैसी संधि के रूप में भारत का आश्वाशन हमेशा वरदान ही साबित हुआ है। 1960 के दशक में चीन की आक्रामकता को देखते हुए, नेपाल केवल भारत पर विश्वास करता था। 1990 के दशक में नेपाल को आर्थिक रियायतें देने का कार्य हो या माओवादी और राजनीतिक ताकतों के बीच शांति दूत बनने का कार्य, सभी में भारतीय भूमिका सराहनीय रही है। वर्ष 2015 में आये भूकंप संकट के दौरान भी नेपाल को सबसे पहले सहायता देने वाला राष्ट्र भारत ही रहा। भारतीय मीडिया के लिए काठमांडू बीजिंग के द्वारा निर्देशित एक ओर मित्र–दुश्मन (थ्तपमदक–जनतदमक–विम) है, तो नेपाली मीडिया भारत पर भूमि–अतिक्रमण करने तथा नेपाल के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप करने जैसे आरोप लगाने में अधिक रुचि रखती है। काला–पानी विवाद के दौरान ऐसी मीडिया रिपोर्टें तेजी से दिखायी गयीं। आज भारत की नेपाल में प्रमुख कमजोरी, नेपाली शासकीय अभिजन वर्ग में भारत को समझने वाले तथा दोस्ती का भाव रखने वाले लोगों की संख्या बहुत कम रह गयी है। आज भारत को इस प्रभावशाली वर्ग को अपनी तरफ आकर्षित करने का रास्ता खोजना होगा, जिससे शीर्ष नेतृत्व स्तर पर मित्रता को मजबूत किया जा सके। (राय 2021)

इस प्रकार, भारत तथा नेपाल दोनों के संबंधों में विश्वास बहाली की जरूरत ज्यादा है। भारत और नेपाल वर्ष 1950 की संधि को, भारत – भूटान के साथ हुई संशोधित संधि के अनुरूप बदल सकते हैं। भारत को चीन के साथ नेपाल के प्रत्येक समझौते को भारतीय सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव के रूप में देखने की जरूरत नहीं है। भारत भविष्य में चीन के साथ संयुक्त रूप से नेपाल में विभिन्न परियोजनाओं पर काम कर सकता हैं। ऐसी सम्भावनायें तलाशनें की जरुरत है। भारत – चीन ने मिलकर अफगानिस्तान में कार्य किया है, अतः नेपाल के संदर्भ में भी ऐसा हो सकता है। भारत चीन के साथ स्वयं कई क्षेत्रों में सहयोग कर रहा है, जिसमें से एक भारत दृ चीन आर्थिक साझीदार हैं। चीन को नेपाल में भारत के प्रतिस्पर्धी के रूप में देखने की जरुरत नहीं है क्योंकि नेपाली जनमानस में अभी चीन की उतनी स्वीकार्यता नहीं है, जितनी भारत की है। भारत के साथ नेपाल के ऐतिहासिक संबंध रहे हैं, दोनों देशों की सांस्कृतिक निकटता अनोखी है। नेपाल और भारत दुनिया के दो प्रमुख धर्मों हिंदू और बौद्ध धर्म के विकास का एक सांस्कृतिक इतिहास साझा करते हैं। प्रस्तावित रामायण सर्किट और बुद्धा सर्किट की योजनायें दोनों देशों को सांस्कृतिक और धार्मिक स्तर पर और गहराई से जोड़ने का कार्य करेंगी।

भारतीय सॉफ्ट पॉवर कूटनीति के उपायों से दोनों देशों के बीच विश्वास बहाली की प्रक्रिया को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री मोदी जी की धार्मिक – सांस्कृतिक स्थलों के दौरे, नेपाल में पशुपतिनाथ रिवरफ्रंट डेवलपमेंट और पाटन दरबार में भंडार खाल गार्डन रेस्टोरेशन नामक दो सांस्कृतिक विरासत परियोजनाओं को शुरू करना, काठमांडू दृ वाराणसी, लुंबिनी – बोधगया के बीच सिस्टर सिटी रिलेशन व्यवस्था, नेपाल को वैक्सीन उपलब्ध कराना, नेपाल के कई क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे में सुधार हेतु परियोजनाओं की शुरुआत करना, जल विद्युत परियोजनाओं में निवेश जैसे प्रयास शामिल हैं। चीन यथार्थवादी राजनीति के आधार पर अपने राष्ट्रीय सुरक्षा हितों को लेकर नेपाल में आगे बढ़ रहा है। उसके मन में शक्ति का एक क्षेत्रीय संतुलन स्थापित करने की इच्छा प्रबल है। जबकि भारत अपने लोकतांत्रिक

मूल्यों तथा ऐतिहासिक – सांस्कृतिक संबंधों के आधार पर नेपाल को प्रमुखता देते हुए अपने रिश्ते को मजबूती देना चाहता है।

REFERENCES

https://mofa-gov-np/- n-d- https://mofa-gov-np/nepal&china&relations/#:~:teÛt¾The%20two%20countries%20formalized%20their]respect%20for%20each%20other's%20sensitivities- (accessed 09 11,2022)

Wang Yi Talks about China's "Three Supports" for Nepal- 03 26] 2022- https://www-fmprc-gov-cn/mfa_eng/wjb_663304/wjbz_663308/activities_663312/202203/t20220327_10656328-html ¼accessed 09 17] 2022½-

एडमिन. प्राइम मिनिस्टर श्री नरेंद्र मोदी एन्थ्रालड नेपाल बाई हिज विजिट. 08 05, 2014. https://www-narendramodi-in/prime&minister&shri&narendra&modi&enthralled&nepal&by&his&visit&6427 (accessed 09 19] 2022)

खन्ना, वी. एन.(1997) *फॉरेन पॉलिसी आफ इंडिया.* नई दिल्ली विकास पब्लिशिंग हाउस,

गार्डनर, डीनाह. पावर प्ले : चाइना एंड इंडिया जॉस्टल फॉर इन्फ्लुएंस इन नेपाल . 08 16, 2014. https://www-scmp-com/magazines/post&magazine/article/1572819/caught&middle\module¾perpetual_scroll_0&pgtype¾article&campaign¾1572819 (accessed 09 17,2022)

गिरधारी दहल. "फॉरेन रिलेशन ऑफ नेपाल विथ चाइना एंड इंडिया ." *Journal of Political Science* Volume XVIII] 2018: 46&61-

गोपाल शर्मा. इंडियाज मोदी ऑफर्स नेपाल +1 बिलियन लोन इन रीजनल डिप्लोमेसी पुश . 03 08 2014. https://www-reuters-com/article/india&nepal&idUSL4N0Q906F20140803 (इस दिन देखा गया 19 09 2022).

चतुर्वेदी, शैलेंद्र कुमार (1983) *भारत–नेपाल संबंध.* दिल्ली, बी.आर. पब्लिकेशन कारपोरेशन,

चाइना एनकरेज नेपाल टू लिव लक्जरियस्ली विथ इट ऑन लोन, अलार्म बेल फॉर अनादर डेब्ट ट्रैप . 08 10, 2022- https://www-aninews-in/news/world/asia/china&encourages&nepal&to&live&luÛuriously&with&it&on&loan&alarm&bell&for&another&debt&trap20220810181750/ (accessed 09 18- 2022)

चौधरी, दीपंजन राय. चाइनाश्ज एगोनी : स्लो पेस ऑफ बीआरआई प्रोजेक्ट इन नेपाल . द इकोनॉमिक टाइम्स. मार्च 31, 2022.

नबराज और सऊद, रमेश और भंडारी, लोकराज गौतम (2021) "डेमॉनेटिजेशन इन इंडिया एंड इट्स इम्पैक्ट इन नेपाल. *स्कॉलर्स जर्नल,* दिसंबर,

नायक, सोहिनी. इंडिया एंड नेपाल'(स) कालापानी बॉर्डर डिस्प्यूटरू ऐन एक्सप्लेनेर. ओआरएफ इश्यू ब्रीफ, दव. 356 (अप्रैल, 2020)

पंत, वाई. पी. (1970) *प्रॉब्लम इन फिस्कल एंड मॉनेटरी पॉलिसी : ए केस स्टडी आफ नेपाल.* नई दिल्ली, विकास पब्लिकेशन , 1970.

पीएम नरेंद्र मोदी एड्रेस्सेस नेपाल कोंस्टीटूएंट असेंबली . 08 03, 2014- https://www-youtube-com/watch\v¾RPÛSS9K_MkM (accessed 09 24,2022)

फड़िया, बी.एल. (2012) *अंतरराष्ट्रीय संबंध.* आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेशन,

बराल, भीम नाथ. नेपाल–चाइना–इंडिया, प्रॉस्पेक्टस एंड चैलेंजेज ऑफ ट्राईलैटरेलिज्म -" *Journal of Political Science*, Volume XIX, 2019

भट्टाचार्य, जी. पी.(1970) *इंडिया एंड पॉलिटिक्स ऑफ मॉडर्न नेपाल.* कोलकाता, मिनर्वा एसोसिएट्स,

भसीन, ए. एस. (1970) *डाक्यूमेंट्स ऑन नेपाल रिलेशंस विद इंडिया एंड चाइना.* नई दिल्ली एकेडमिक बुक

मिश्रा, ओब्जा बोराह हजारिका विवेक. सॉफ्ट पॉवर कंटेस्टेशन बिटवीन इंडिया एंड चाइना इन साउथ एशिया -" *Indian Foreign Affairs Journal* Vol- 11, No- 2, April–June 2016

राय, रंजीत.(2021) *काठमांडू डाइलेमा रीसेटिंग इंडिया – नेपाल टाइस .* गुरुग्राम, विंटेज पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया,

रेग्मी, डी.आर.(1952) *अन्सिएंट एंड मिडुअल नेपाल.* काठमांडू रत्ना पुस्तक भंडार,

वेले, ड्यूश. नेपाल :' व्हाट हैप्पेंड टू चाइनीज बेल्ट एंड रोड प्रोजेक्ट? 08 25, 2022. https://frontline-thehindu-com/dispatches/nepal&what&happened&to&chinas&belt&and&road&projects/article65466849-ece (accessed 09 19, 2022)

साहू, अरुण कुमार. फ्चयूर ऑफ इंडिया– नेपाल रिलेशन इज चाइना ए फैक्टर?ष स्ट्रैटेजिक अनालिसिस Vol- **39**, No- **2,** (2015)

सिंह, आभा (2020). *भारत–नेपाल संबंध : एक राजनीतिक अध्ययन.* दिल्ली अंकित पब्लिकेशन,